अंक - प्रथम : अप्रेल से जून 2022

अखिल सेतु

अथाई समूह की वैचारिक त्रैमासिक ई-पत्रिका

➤ कृपया खोलकर रचनाओं का आनंद लीजिए।

➤ अपने अन्य साहित्य मित्रों को आगे प्रेषित कीजिए।

➤ अपने साहित्य मित्रों को 'अथाई समूह' से जुड़ने के लिए प्रेरित कीजिए।

प्रधान सम्पादक : जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

संपादिका : श्रीमती शोभा टण्डन, जोधपुर

2022

अखिल सेतु -अप्रैल से जून 2022

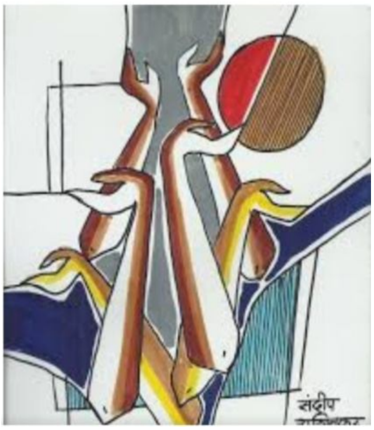

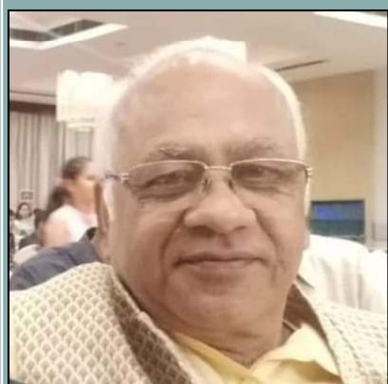

डा.अखिल बंसल

अथाई आशा इण्टरनेशनल समूह

अखिल सेतु

(अथाई समूह की वैचारिक त्रैमासिक ई-पत्रिका)

परामर्श :

श्री मिलापचंद डण्डिया, जयपुर

डा.एन.के.खींचा,जयपुर

श्री किशनलाल जांगिड़, जोधपुर

प्रधान संपादक :

डा.अखिल बंसल,जयपुर

संपादिका :

श्रीमती शोभा टण्डन,जोधपुर

संपादक मण्डल :

श्री राजेश पाठक “प्रवीण” जबलपुर

श्री राजेन्द्र जैन गुलेच्छा "राज", बेंगलुरू

श्री भूराराम सुथार, जोधपुर

डा.इन्दु जैन "राष्ट्र गौरव", दिल्ली

ई-मेल : athaisamvad@gmail.com

मेरी कलम से....

समन्वय वाणी फाउंडेशन 20 अगस्त 2008 से राजस्थान सरकार द्वारा पंजीकृत न्यास है,इसका रजिस्ट्रेशन क्रमांक 2008397000897 है। इस न्यास के माध्यम से आशा(अध्यात्म, अहिंसा, शाकाहार एशोसिएशन) एवं

अथाई समूह का संचालन "अथाई-आशा इन्टरनेशनल" के नाम से किया जाता है। अथाई समूह 22अप्रैल 2020 को अस्तित्व में आया जबकि आशा महावीर जयंति 2016 से सामाजिक कार्यों में संलग्न रही। 26 अगस्त 2008 से समन्वय वाणी फाउंडेशन विधिवत कार्यरत है।

अथाई समूह में नवोदित रचनाकारों को आगे बढने का भरपूर अवसर दिया जाता है। साप्ताहिक चित्र प्रतियोगिता, आन लाइन काव्यगोष्ठी ,अथाई यूट्यूब चैनल तथा समय -समय पर आयोजित अन्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से ग्रुप के सभी सदस्य अपनी प्रतिभा विकसित करते हैं। प्रतिदिन पटल पर सभी अपनी रचनाएं प्रस्तुत करते हैं। कुटुम्ब एप पर भी सभी सदस्य सक्रिय हैं। विचारोत्सव भी सभी रचनाकारों को विषय वस्तु प्रस्तुत करने का अवसर देता है जिसकी विधिवत समीक्षा की जाती है। समन्वय वाणी पाक्षिक पत्र 5 अप्रैल 1981 से नियमित प्रकाशित पत्र है,इसमें भी रचनाकारों की रचनाएं समय-समय पर प्रकाशित की जाती हैं।सन् 2020 में अथाई काव्य प्रवाह एवं 2021 में अथाई काव्यकोश काव्य संग्रह प्रकाशित किये गये हैं। अन्य विविध विषयों पर भी 27 पुस्तकें समन्वय वाणी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित की गयी हैं।

"अखिल सेतु" का यह प्रवेशांक आपके हाथों में है।आशा है आपको हमारा यह प्रयास रुचिकर लगेगा।यह त्रैमासिक ई-पत्रिका के रूप में आपको मिलती रहेगी। इस परिकल्पना को मूर्तरूप देने में श्रीमती शोभा टण्डन का प्रयास सराहनीय है। वे ग्रुप का संचालन भी बखूबी कर रही हैं। इस ई-पत्रिका के प्रस्तुति करण में श्री किशनलाल जांगिड़, श्री भूराराम सुथार एवं श्री राजेन्द्र गुलेच्छा जी ने रुचिपूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग हेतु हम ह्रदय से आभारी हैं। वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचंद डण्डिया ,रिटायर्ड प्रशासनिक अधिकारी श्री एन.के.खींचा एवं जनसंचार विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष डा.संजीव भानावत का सहयोग तो हमें हर पल मिलता ही रहता है।डा.इन्दु जैन सचिव का दायित्व निभा रही हैं एवं श्रीमती सुषमा खरे चित्रप्रतियोगिता के संचालन में सहभागिता दे रही हैं।सभी सहयोगियों का आभार। इस अंक में कुछ सारभूत लगे तो ग्रहण कीजिये और कुछ कड़ुवापन लगे तो मुझे लौटा दीजिए। आपके विचारों का सदा समादर है।

जर्नलिस्ट डा.अखिल बंसल

संपादकीय

आजकल लेखन एक गरीब का अक्रोश है जो कहीं आदमी का दर्द है, जो बोलना तो चाहता है पर वो दमखम नहीं है| सांस्कृतिक नैतिकता और आध्यात्मिक अमूल्यन के साथ ही हमनें अहिंसा, शब्द भी अपने स्वार्थ के साथ जोड़ दिया है | समकालीन वातावरण और राजनीति प्रतिबद्धताये भी लेखन को प्रभावित करती हैं, संक्षय के दीप, विषधरो के वंशहर हंसी को डसने को आतुर हैं, कांच सा दिल रखने वाली हमारी कल्पना यथार्थ के बिना उड़ान नहीं भर सकती |सृजन की नवीनतम परम्परा कहाँ से लायें, छोटा घर परिवार, बेजूबानी के आलम कोई हलचल नहीं, बेकरारी सी लपेटे छुईमुई सी जिंदगी कलम उठाते ही हारे हुए एक बे रोज़गार सी चीत्कार उठती है, बस पठन पाठन का शौक, ज्ञान पिपासा अथाई में लिखने वाले नव लेखकों की ओर ध्यान बरबस खींच लेती है |

जर्नलिस्ट डा० अखिल बंसल जी ने अथाई को एक प्रबल संवाद के रूप में प्रस्तुत किया, हमने सांस्कृतिक संस्कृति दी है, किसी ने सभ्यता, किसी ने अपने सुरूचि पूर्ण लेखन से इसे आकार और प्रकार दिया है |

आदरणीय किशन लाल जी जांगिड़, सचिव राष्ट्र गौरव डा० इंदु जी जैन, राजेन्द्र गुलेच्छा जी एंव भूराराम जी सुथार का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस कार्य में भरपूर सहयोग दिया |

अंत में मैं डा० अखिल बंसल जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, आपने समय समय पर हमेशा मेरा उचित मार्गदर्शन किया,भविष्य में भी इसी प्रकार आपका स्नेह बना रहे |

श्रीमती शोभा टंडन, जोधपुर

अपनी बात

अथाई आशा इन्टरनेशनल साहित्यिक मंच साहित्यकारों की मौलिक अभिव्यंजना का माध्यम है। जनमानस में अनन्त उम्मीद को भरना, सकारात्मक चिन्तन से मानव समाज को नई दिशा प्रदान करना, नवीन सृजन से अखिल विश्व में जनजागृति का प्रसार करना , इसी पावन ध्येय से पत्रकारिता के महानायक डॉक्टर श्रद्धेय अखिल जी बंसल साहब का हर प्रयास एवं साहित्यिक नवाचार अनुकरणीय है, आपका पुरुषार्थ वन्दनीय है। संस्थापक के रूप में हम सभी के मानस पटल पर आपका यश स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेंगा।

सचिव महोदया डॉक्टर श्रीमती इन्दुजी जैन राष्ट्रीय गौरव चन्द्रमा की भांति अपनी ज्योत्स्ना से सभी बन्धु बान्धव को आह्लादित करती रहती है, संयोजिका विदुषी श्रीमती शोभाजी टण्डन समस्त परामर्श मण्डल को मनन के लिए प्रेरणा प्रदान करके अनुगृहीत करती है।इस मंंच के सक्रिय अग्रज पूजनीय है वे अनमोल मोतियों की माला है, अलोकिक रत्न है जिसके आलोक से अथाई आशा मंंच हमेशा जगमगाता रहता है।कुछ सूर्य की भांति सदैव परिलक्षित होते, कुछ ग्रह नक्षत्र की भांति कभी कभी प्रकट होकर चकित करते हैं।

किशनलाल जांगिड़, जोधपुर

"सादर नमन है लेखनी के सरताजों को ।
सादर नमन शब्दों के सुरीले साजों को ।
अंतर्मन को चैतन्य और जागृत करती और
मूक कलम से निकली कवियों की आवाज़ों को।
सादर नमन है लेखनी के सरताजों को।"

अथाई-आशा इंटरनेशनल काव्य मंच के वटवृक्ष तले मुझ जैसे कई नवांकुरों को इसकी मजबूत शाख़ा रुपी काव्य स्तंभों का स्नेह, शीतल छाया एवं मार्गदर्शन मिला है। इसके परिणाम स्वरूप ही हम कल्पना और रचनात्मकता के इस विशाल साहित्य सरोवर का हिस्सा बनकर आत्मिक आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। समूह के **154** सम्मानित सदस्य समय--समय पर इस समूह में होने वाली चित्र प्रतियोगिता, दैनिक काव्य प्रदर्शन, विचार उत्सव तथा गाहे--बगाहे कुछ विशेष दिवसों पर दिए गए विशेष साहित्यिक कार्य में प्रतिभागी के रूप में स्वयं की ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करवाते रहते है। काव्य रचना हेतु जितने उत्कृष्ट विषय रखे जाते हैं उतने ही सुंदर शब्दों में की गई उनकी समीक्षा भी हमें उत्साहित करती है। निर्णायक मंडल द्वारा प्रतिभागियों के उत्साहवर्धन के लिए प्रतियोगिता के प्रथम तीन स्थान प्राप्त विजेताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया जाता है।

संपूर्ण भारतवर्ष में फैली इस अथाई - वटवृक्ष की शाखाओं से देश के विभिन्न प्रांतों की सामाजिक समरसता से परिपूर्ण तथा विविध संस्कृतिक धरोहर को समेटे हुए काव्य-रस बरसता है। इस परिवार का एक हिस्सा होने का सौभाग्य हमें भी प्राप्त है। इसके लिए हम अथाई समूह के संस्थापक श्रीमान डॉ अखिल जी बंसल एवं समस्त मेरे आदरणीय साहित्यकार सदस्यों का मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हुँ तथा इस समूह में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में अधिक से अधिक संख्या में बढ़ चढ़कर भाग लेने का आहवान करता हुँ।

पुनः सभी को सादर वंदे।

भुराराम सुथार
जीव विज्ञान व्याख्याता
जोधपुर

: अनुक्रमणिका :

1. **नया वर्ष** : डॉक्टर श्री अखिल बंसल
2. **फाल्गुन माह** : श्री किशन लाल जी जांगिड़
3. **साहित्य के लक्ष्य** : श्री राजेंद्र जैन गुलेछा "राज"
4. **मेहनत होनर का संगम** : श्रीमती प्रभा जैन
5. **नेह रंग भर लाई होली** : श्रीमती डॉक्टर संध्या जैन "श्रुति"
6. **भारत भू स्वर्ग हमारा** : डॉ श्री अखिल बंसल
7. **प्रेम ऐसा भी** : श्री सतीश लखोटिया
8. **सजना नाहीं अंगना** : श्री ज्ञानेंद्र पांडेय अवधी "मधुरस"
9. **मेरा भारत वहाँ** : श्री अनिल जैन "अंकुर"
10. **व्यवस्था** : श्री राजेंद्र जैन "अनेकांत"
11. **हिंदी है हम** : श्री भुराराम सुथार
12. **तड़प का असर** : श्री संजय जैन "बीना"
13. **अंतर्मन** : श्रीमती डॉक्टर भावना शुक्ल
14. **तरुणाई के प्रति जागृति** : श्री राजेंद्र जैन "रतन"
15. **परिवार** : श्रीमती भारती माहेश्वरी
16. **स्वामी विवेकानंद** : श्रीमती अनीता उपाध्याय "सुरभि"
17. **क्या कहती है ठिठुरन** ? : डॉक्टर आलोक रंजन कुमार
18. **कोई नहीं** : श्रीमती शमा जैन सिंघल
19. **मुसाफिर** : श्रीमती चंद्रकला दुबे
20. **कर्म धरा** : श्री स्वप्निल जैन
21. **जीवन एक संघर्ष** : श्रीमती राजश्री राठी
22. **गठबंधन** : श्री अटल राम चतुर्वेदी
23. **सेवा शुल्क** : श्रीमती डॉ रेखा जैन
24. **पराकाष्ठा** : श्री किशन लाल जी जांगिड़
25. **वह सुबह कब आएगी** : श्री राम प्रकाश अवस्थी "रूह"
26. **होली की कहानी**: श्रीमती सरिता "साहिल"

संपादकीय कलम :

1 श्री राजेंद्र जैन गोलेछा "राज", बेंगलुरु
2 श्री भुराराम सुथार, जोधपुर
3 इंदु जैन "राष्ट्र गौरव", दिल्ली
4 श्री किशन लाल जी जांगिड़, जोधपुर
5 श्रीमती शोभा टंडन, जोधपुर

(1) "....नया वर्ष"

****

नया वर्ष अब आ गया
खुशियां लिए अपार,
छोडो सर्व प्रपंचों को
करो आत्म उद्धार ।

बैर और अभिमान छोड दो
त्यागो अन्य विकार
मेल-मिलाप रखो तुम सबसे
यही जगत में सार।

दो दिन के मेहमान सभी जन
है संसार असार
फिर क्यों रखते द्वेष भाव तुम
करो सभी से प्यार।

आओ गले लगाएं सबको
मत भटको संसार
"अखिल" विश्व में स्वाध्याय से
होगा बेडा पा**र।**

रचनाकार:

जर्नलिस्ट श्री अखिल बंसल

(2) "....फाल्गुन माह"

****

फाल्गुन माह उमंग मस्ती से भरा।
फागोत्सव जनमन उल्लास भरा।
शीतल समीर वलय तेज चले जरा।
मन में सबके आलस्य भरती जरा।

प्रसन्नता सूचक सदैव ही रंग हरा।
शस्य श्यामला वसुधा आँचल हरा।
जीवन में रस घोलें ममतामयी धरा।
असंख्य अनुराग सरिता स्रोत धरा।

धवल पवित्रता शान्ति सन्देश खरा।
विश्व मित्र मानवता पर रहता खरा।
विश्व शान्ति संकल्प से संकट टला।
नरसंहार घातक जग समर भी टला।

केसरिया त्याग बलिदान धन्य रहा।
तिरंगे का अनन्त सम्मान भाव रहा।
लाल पीला बैंगनी नीला भावन रहा।
सतरंग सुन्दर छटा जगसिरमौर रहा।

फाल्गुन महीने चंग फाग गीत गूँजा।
बाल किशोर गीतों से हर शहर गूँजा।
सुख समृद्धि वरदान होलिका पूजा।
प्रतिफल पुरुषार्थ प्रथम प्रकृति पूजा।

अथाई आशा फाल्गुन उत्सव सजा।
अखिल भुवन शशि शोभा से सजा।
वैर भाव परित्याग करके प्रेम प्रजा।
होली आनन्द ले सहज राजा प्रजा।

रचनाकार:
श्री किशनलाल जांगिड़ जोधपुर

(3) साहित्य लक्ष्य

****

जो यथार्थ का करता चित्रण
वो साहित्य प्रखर हो जाता है,
जिसमें सत्य का मिलता विवरण
वो साहित्य अमर हो जाता है..!

साहित्य जीवन का दर्पण है
जिंदगी के ढंग सिखाता है,
सुख दुःख करुणा प्रेम लाचारी
ये सबके रंग दिखाता है..!

जो समाज को करते प्रेरित
वो साहित्य अनुपम होते है,
जो बदले जीवन की दिशा
वो साहित्य हृदयंगम होते है.!

ये भाषा को समृद्ध करते है
ये भाषा को विस्तृत करते है,
साहित्य भाषा का मान बढ़ाते
ये भाषा को उत्कृष्ट करते है.!

इतिहास को जो गलत बताए
वो साहित्य पथ भृष्ट होते है,
जो चाटुकारों ने लिखे है
वो साहित्य निकृष्ट होते है..!

संस्कृति के संवाहक होते
विरासत जीवित रखते है,
साहित्य भाषा की धरोहर
जो हर लक्ष्य को परखते है..!

साहित्य का लक्ष्य यही होता है
वो जीवन का उत्थान करें,
सत्य अहिंसा मानव गुणों का
जो स्वयं में गुणगान करें..!

रचनाकार:
जैन श्री राजेंद्र गुलेच्छा "राज"
बैंगलोर
M. 9620212395

(4)“...मेहनत हुनर का संगम”

****

हुनर हो हाथों में कोई अगर,
तो मेहनत से रोटी मिल जाती,
अनपढ़ महिला स्वावलम्बन से,
गृहस्थी का पालन करजाती।

मनमे हर्ष उल्हास परिश्रम धार,
बांस की चीपलियाँ गुंथी सारी,
कितनी सुंदर रंगबिरंगी टोकनी,
ग्रीष्म में पंखा ठंडक दे भारी।

भैय्या ले लो, बहना तुम भी लो,
हवादार हल्की फुल्की प्यारी,
मेहनत के रंग से रंगीन देखो,
कितनी मनभावन कलाकारी।

दस रुपये कीपांच रुपये में लो,
बोणी बट्टा करवा दो बाई आज,
मैं भी छोरी को पढ़ने भेजूंगी।
होली पर थोड़ा कर लुंगी साज।
चित्र आधारित

रचनाकार:
श्रीमती प्रभा जैन इंदौर

(5)"....नेह रंग भर लाई होली"

****

देखो जी अब आई होली
मलो नेह के केसर रोली
रंग-बिरंगे जल के धारे
हंसी- फुहारों में हमजोली

आई होली आई होली

हरी चुनरिया धरती ओढे
फूलों पर पिचकारी छोड़े
नीले, पीले, हरे ,बैगनी
सुमनो की आवलियांँ डोली

आई होली आई होली

रंग -अबीर, गुलाल लगाओ
सतरंगी सपने महकाओ
आओ आओ मिलकर गाओ
बुरा ना मानो गूंजी बोली

आई होली आई होली

आज किसी से बैर नहीं है
लगता कोई गैर नहीं है
आते जाते हंँसते गाते
मस्ती की मनभावन टोली

आई होली आई होली ।

झूम रहे सारी मस्ती में
खुशियांँ आई है बस्ती में
इंद्रधनुष उतरा धरती पर
नभ ने रंगी चूनर खोली

आई होली आई होली
नेह रंग भर लाई होली ।।

रचनाकार:

डॉ श्रीमती संध्या जैन "श्रुति"

(6)“….भारत भू है स्वर्ग हमारा”

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

भारत भू है स्वर्ग हमारा
इस पर सब कुर्बान है,
ये कश्मीर शीश है जिसका
सबका वह स्वाभिमान है।।

देश का चौकीदार सजग है
चोरों की आई शामत,
नित्य नयी हैं राह खोजते
बहुत विशम है यह आफत।।

चालिस चोर इकट्ठे होकर
सत्ता को ललकार रहे,
एक अकेला सब पर भारी
मद में सब हुंकार रहे।।

विश्व पटल पर भारत का
सम्मान बढाना ठाना था,
अपनी इस जिद को भी देखो
सहज पूर्ण कर माना था।।

आंख उठाकर देखा जिसने
उसको धूल चटाई है
चीनी हों या पाकिस्तानी
सबने मुंह की खाई है।।

ऋषभदेव जन्मे जिस भूमि
वही भूमि श्री राम की
ऐसी रचना रची वहां पर
मंदिर में संग जानकी।।

सभी तरह खुशहाल हो भारत
सुंदर स्वप्न सलोना है,
पांच वरष में बदल दिया सब
"अखिल" इसे न खोना है।।

रचनाकार:

डा. श्री अखिल बंसल

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(7) "....प्रेम ऐसा भी"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पहली नज़र का प्यार
देखते ही उसे हो गया प्यार
हो नहीं रहा मुझे एतबार
दिल को कैसे समझाऊं
यह समझ से परे
उसकी मूरत को देखने
तरस रहे नयन मेरे
पलक झपकते ही ओझल हो गई वो
अता, न पता कैसे करूं उसका दीदार
रेत की तरह फिसल गया दिल
क्या इसी को कहते
पहली नज़र का प्यार
राधा - कृष्ण ने भी
निहारा निश्चल प्रेम से
एक दूजे को नयनों से
रूह से प्रेम की यही परिभाषा
कहते प्यार ईश्वर की देन
जब वो करेगी मेरे प्यार को कुबूल
तभी आएंगा मेरे दिल को चैन

रचनाकार:

श्री सतीश लाखोटिया, नागपुर, महाराष्ट्र

9423051312 / 9970776751

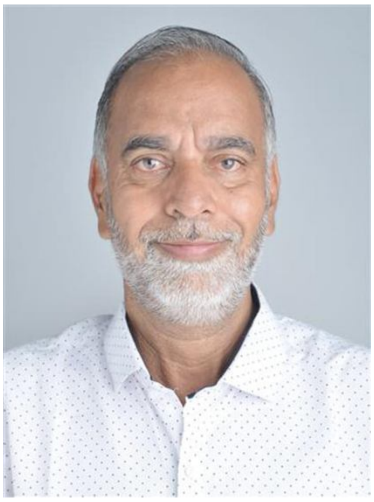
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(8) “.....माहिया”

~~~~~~~~~~~~~

सजना नाहीं अँगना
कैसे खेले होली
सुध खोई है अँगना

फूलीं हाराँ फलियां
केवल ना फूलों
वनमानुष की कलियाँ

कटती नाहीं रातें
दिन गिनगिन बीते
हो ना उनसे बातें
आंखें भी अब सूखीं
फागुन भी सूखा
यादें लगती रूखीं

कौन भला डाले
चुनर है कोरी
यौवन तू इतराले

ननदी मारे ताने
पनघट पर सखियाँ
हैं बातन जिद ठाने

आओ खेलें होली
भान नहीं होगा
मिल जायें हमजोली

चुपके-चुपके ढुरके
नेह सनी बूँदें
जब आँखों में झलकें

प्यास न बुझ पाई
आशाओं का घट
खाली जमती काई

निष्ठुर जब भी आते
खिल जाता मधुबन
भँवरे भी मँड़राते

रचनाकार:

श्री ज्ञानेन्द्र पाण्डेय अवधी-मधुरस अमेठी

8707689016

~~~~~~~~~~~~~

(9) “.....मेरा भारत वहाँ”

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

होता जहाँ वेद,पुराण ,उपनिषद्
जय धवला ,महा धवला का गान।
मान है बाइबिल,गुरुग्रंथ साहब
का जहाँ, दिखता है मेरा भारत वहाँ।

संदेश कर्म पथ का
मिलता गीता में जहाँ,
पित्राज्ञा रामायण में
दिखती सर्वोपरि जहाँ,
संस्कृत सर्व भाषाओं की
जननी कहलाती जहाँ,
साहित्य -संगीत -कला की
बहती हो त्रिवेणी जहाँ,
मन से आज कहता हूँ,
दिखता भारत देश मेरा वहाँ।

सर्व धर्मों को मिला समभाव जहाँ,
सर्वोच्च भाव ईशभक्ति का जहाँ,
धर्म- संस्कृति से जुड़ाव है जहाँ
प्यारा भारत मुझे दिखता है वहाँ ।
बहती जहाँ गंगा की निर्मल धारा,
ईशभक्ति का है दृश्य यहाँ न्यारा।
गाय को माना जाता है माता जहाँ,
दिखता मेरा प्यारा भारत वहाँ।

जहाँ दीपावली के दीप दिखें,
जहाँ दिखे रक्षाबंधन की राखी।
उड़ते होली के रंग विविध जहाँ,
मेरा प्यारा भारत दिखता है वहाँ।

जहाँ पूजे जाते होंं राम-कृष्ण,
जहाँ माने जाते होंं महावीर,
जाने जाते हों ईसा मसीह जहाँ,
मेरा महान भारत दिखता वहाँ।

राष्ट्रीय पर्वों की रहती धूम जहाँ,
यज्ञानुष्ठान का है अस्तित्व जहाँ,
वृक्ष भी पूजे जाते हैं नित्य जहाँ,
ऐसे भारत को छोड़,मैं जाऊँ कहाँ ?

73 वें गणतंत्र दिवस पर आज
संकल्प यही मन में हम सब करें,
'भारत का हम सदा मान बढ़ाएँ''
संविधान का मन से सम्मान करें।

रचनाकार: *

श्री अनिल जैन “अंकुर”

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(10) "....व्यवस्था"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

व्यवस्था से ही अवस्था अतः
व्यवस्था करिए सदा सटीक
व्यवस्था के अनुकूल चलें जो
व्यवस्था उनको ही लगती ठीक

व्यवस्था समय ठीक संयोजन
व्यवस्था से तब आत्म नियोजन
व्यवस्था पूर्व करें आत्म मंथन
व्यवस्था से तब सधे प्रयोजन

व्यवस्था से ही मिले सफलता
व्यवस्था तब लगती सुख दायक
व्यवस्था से जब मिले विफलता
व्यवस्था तब बनती दुखदायक

व्यवस्था से ही धर्म कर्म सम्पन्न
व्यवस्थापक तब ही होते धन्य
व्यवस्था चलती सदा सुचारू
व्यवस्था वो ही बनती अनन्य

व्यवस्था मे हो सबकी सहमति
व्यवस्था मे किन्तु न हो कुतर्क
व्यवस्था मे केवल जब स्वारथ
व्यवस्था से तब रहिए सतर्क

व्यवस्था से सबका कल्याण
व्यवस्था तब लोक तंत्र की जान
व्यवस्था मे जब संयम भाव
व्यवस्था से तब मिटें अभाव

व्यवस्था से जब ठीक प्रबंधन
व्यवस्था से तब ही अनुशासन
व्यवस्था तब ही बने विशाल
व्यवस्था जब करता शासन

व्यवस्था अंतर मन आल्हाद
व्यवस्था मे तब बिछते फूल
व्यवस्था भेद भाव से मुक्त
व्यवस्था तब 'अनेकांत' अनुकूल।

<u>**रचनाकार:**</u>

श्री राजेन्द्र जैन अनेकांत

बालाघाट दि 22-02-2022

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(11) "...हिंदी है हम"

~~~~~~~~~~~~~~~~

भारत के माथे की बिंदी,
सुँदर-सरस-सजीली हिंदी।
आर्यकाल से वर्तमान तक,
गौरव का अभिप्राय है हिंदी। (1)
युगों-युगों से शासन करती,
भारतवर्ष की शान है हिंदी।
दूर क्षितिज में मेल कराती,
वसुधा और आकाश है हिंदी। (2)

भिन्न-भिन्न भावों की मात्रा
अलंकार-अनुप्रास है हिंदी।
श्रृंगार-व्यंग्य और हंसी ठिठोली
गीत-संगीत और अभिनय हिंदी। (3)
विविध क्षेत्र है, विविध बोलियां,
एकजुट फिर भी करती हिंदी।
अस्तित्व का पहचान कराती,
हम सब का है परिचय हिंदी। (4)

विस्मृत हो गई कई सभ्यताऐं,
पुष्पित-पल्लवित किन्तु हिंदी।
उत्तर से दक्षिण तक फैली
संस्कृतियों का सेतू हिंदी। (5)
सक्षम-सबल-सफल बनाती,
अतुलित सारगर्भित हिंदी।
यशगाथा का वर्णन करती,
भूत-भविष्य-आज है हिंदी। (6)

अंतरराष्ट्रीय शब्दकोश का,
सूना आँगन भरती हिंदी।
वैश्विक मंच की चकाचौंध में
दीप प्रज्वलित करती हिंदी। (7)
देश प्रेम में प्राण फूँकती,
साहित्यिक शक्ति है हिंदी।
सदा रही है सदा रहेगी
भारत का अभिमान है "हिंदी"।
भारत का अभिमान है "हिंदी"। (8)

रचनाकार:
श्री भूरा"राम" सुथार
जोधपुर, राजस्थान
अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस के उपलक्ष में माँ हिंदी को प्रणाम ।

~~~~~~~~~~~~~~~~

(12)“....तड़फ का असर”

~~~~~~~~~~~~~~~~

मिलना बिछड़ना यारो,
जिंदगी का एक पहलू है।
वहां तुम तड़फ रहे हो,
यहां हम तड़फ रहे है।
मदहोश ये निगाहे,
तुमको ही खोज रही है।
जिसे तुम देख रहे हो,
वो तेरे सामने खड़ा है।।

किस्सा ये मोहब्बत का,
किसने शुरू किया है।
दिल बहुत मचलता,
जब सामने से वो निकलते।
न पाने की है चाहात,
और न खोने का डर है।
वो मेरे दिल में बस्ते,
हम उनके दिल में रहते।।

जब भी होते है अकेले,
याद वो ही आते रहते।
खाली पना ये दिल का,
उनके बिना नही भरता।
कैसे कहे हम उनसे,
बन जाओ मेरी तुम सांसे।
जिंदगी जियेंगे दोनों,
हिल मिलकर यहां पर।
करके मोहब्बत दोनों,
बनायेंगे एक प्यार का महल।।

रचनाकार:

श्री संजय जैन "बीना" मुम्बई

16/03/2022
~~~~~~~~~~~~~~~~

(13) "....अंतर्मन"

~~~~~~~~~~~~~~~~

मन के झरोखे
में झाँका
मन को आँका।
हुई कुछ आहट
कैसी है फड़फड़ाहट
वे थे ......
अंतर्मन के पृष्ठ
जिनमें थी यादें
जिनमे है प्यार-अपार
मनाते थे ख़ुशी से हर त्यौहार
माँ खूँट कर देती थी कजलियां
साथ थी सहेलियां.....

रहता था शाम का इन्तजार
हाथ में देते थे सब ममत्वरूपी धन
खुश हो जाता था मन
घर-घर मिलता था प्यार
वो पल था कितना यादगार
मन में रहेगी सदा चाहत
न होगी उन पलों की कभी आहट

इसलिये
उन पलों को सहेजकर रख देते है
जब मन हुआ खोलकर चख लेते है।
काश अंतर्मन के झरोखे खुले रहे
खुली आँखों से सब सदा देख।

रचनाकार:
डॉ श्रीमती भावना शुक्ल
~~~~~~~~~~~~~~~~

(14)“....आध्यात्मिक गीत”

� तरूणाई के प्रति जागृति �

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

गुमराह हो रहे क्यों? इनको जरा संभालो
गर ये भटक गए, तो फिर हाथ न आएंगे।

कहां गए आदर्श? भूल किसकी है,
दी मूल संस्कृति, छोड स्वयम है ।
अपनाई पाश्चात्य सभ्यता, यही भूल अपनी है।

पूर्व संस्कृत के प्रति हमको,जागृत लाने होगी
स्वयम इसे अपनाकर ,घर घर अलख जगाने
होगी।

अभी वक्त है चेतो , वरना पछताओगे।
वक्त हाथ से निकल गया तो, फिर कुछ ना
पाओगे।

कौन चुका पाया है अब तक? अरे मूल्य माटी का।
जिस मिट्टी में जन्म लिया है, वही तीर्थ जीवन का।

देश तीर्थ सब व्यथं रे पागल,केवल भ्रम है मन का।
निर्मल मन हो भाव समर्पण, सदा लक्ष्य जीवन का
।

रचनाकार:

श्री राजेन्द्र जैन" रतन "

जबलपुर (म प्र)

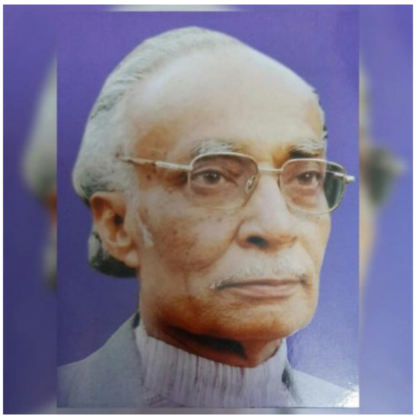
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(15) "....परिवार"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

जहां हो सूर्य की किरणें आता उजियार
वही परिवार कहलाता है
जहां दिए जाते हैं संस्कार"
वही परिवार कहलाता है
जहां खुली किताब समझे जाते विचार"
वही परिवार कहलाता है
जहां आते हैं एक दूसरे के काम
वही परिवार कहलाता है
जहां बोली जाती प्रेम की भाषा
वही परिवार कहलाता है
जहां घर में होता सत्संग
वही परिवार कहलाता है
जहां बड़ों का हो आदर सत्कार"
वही परिवार कहलाता है
जहां चारदीवारी में भी हो आनंद
वही परिवार कहलाता है
जहां ईर्ष्या द्वेष का ना हो समावेश
वही परिवार कहलाता है
जो मकान ना हो कहलाए घर"
वही परिवार कहलाता है

रचनाकार:

श्रीमती भारती महेश्वरी नलखेड़ा
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(16)"....स्वामी विवेकानंद"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

भारत में पैदा हु ए
किए हे महान काम
आपके श्री चरणो में
कोटि कोटि प्रणाम
एक महान हिंदू संत नेता

रामकृष्ण मठ की करी स्थापना
12 जनवरी को जन्म दिवस
मनाता है जन-जन
कई स्थानों में भाषण देकर
मिला इन्हें सम्मान

पूरे विश्व में यह हु ए
नेता बड़े महान
अच्छे खिलाड़ी थे बचपन से
परोपकार की करते चिंता
भारत भूमि में जन्म लिया

याद करता हिंदुस्तान
सनातन धर्म वेदों का ज्ञान
सच्ची इनकी भाषा
थे एक सच्चे पुजारी
पढ़ते वेद रामायण गीता

सच्चे गुरु रामकृष्ण
उनसे था प्रेम अधिक
ध्यान योग प्राणायाम
निपुण थे बहु त

महापुरुष थे इस धरती के
सच्चा था यह देश पुजारी
भारत मां की गोद में खेले
याद करती है दुनिया सारी

रचनाकार:
श्रीमती अनीता उपाध्याय सुरभि डिंडोरी

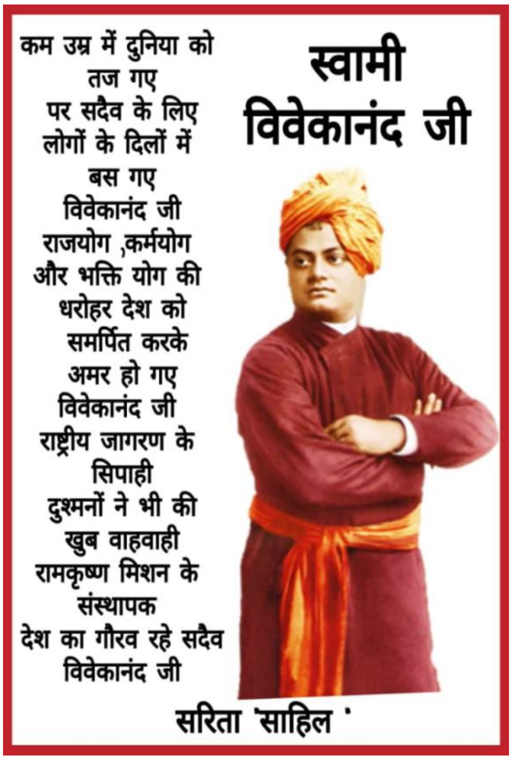
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(17) "....क्या कहती है ठिठुरन"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

क्या कहती है ठिठुरन हिन्दुस्तान के जवान से
पूछो।

क्या कहती है ठिठुरन सियाचिन के जवान से
पूछो।

निर्धन, लाचार, बेबस, अभावग्रस्त इंसान से
पूछो।

ठिठुरन क्या कहती है वृद्ध इंसान के ईमान से
पूछो।

किसी बिटिया के निर्धन बाबा के घर जाकर
देखो

ठिठुरन क्या कहती है उसके घर के मेहमान से
पूछो।

रचनाकार:

डॉ. श्री आलोक रंजन कुमार

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(18) "....कोई नहीं"

कैसे कट रही जिंदगी, पूछता कोई नहीं
आंखों से दर्द की गहराई ,नापता कोई नहीं

गम के अश्कों से जो, भीगतीं पलकें
दामन से अपने, पोंछता कोई नहीं

साथ चलते तो बहुत, मगर साथ निभाता कौन
मुश्किल घड़ी में, काम आता कोई नहीं

तू परेशां ना हो, मैं तेरे साथ हूँ
बन हमदर्द मेरा, कहता कोई नहीं

गर वो होते अपने, रूठते तो कभी
हम मनाना चाहते हैं, रूठता कोई नहीं

रचनाकार:
श्रीमती "शमा जैन सिंघल
जोरहाट असम"

(19) "....मुसाफ़िर"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~

जहाँ में आये हैं हम सब,
छोड़ सब माया जाना है।
न कुछ लेकर हम आये थे,
न कुछ भी साथ जाना है।।

ये दुनियाँ मुसाफिर खाना है,
हमें छोड़ इसे तो जाना है।
जब मरना जीना एक हुआ,
तन त्याग यहाँ से जाना है।।

इस तन का कभी गुमान न कर,
जाने किस छण इसे छोड़ना हो।
यह एक किराये की कोठी,
घर मालिक का,तेरा रहना हो।।

अपना अपना कर जोड़ लिया,
नहीं हाथ उठाकर दान किया।
जब हुआसमय पूरा जग का,
नहीं साथ तेरा कुछ हाथ गया।।

हम सभी मुसाफिर हैं प्राणी,
हम आज यहां,कल कहाँ रहें।
आना -जाना यह लगा हुआ,
गठरी को सम्हालेअपना कहें।।

कर जतन कोई गति परम बने,
नहीं तन को कोई यातना हो।
जब भी हो बुलावा ईश्वर का,
सब छोड़ स्वजन तू रवाना हो।।

उस मालिक का कर सुमरन तू,
जिसने मानव तन दिया तुझे।
धन,धाम दिया परिवार दिया,
मुंह,आंख,कान मिली रसना तुझे।।

दीन दुखी की कर सेवा,
हाथों से दान किये जाना।
चरणों से चलकर काया को,
भगवान के मंदिर ले जाना।।

रचनाकार:
श्रीमती चंद्रकला दुबे

~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(20) "...कर्मधरा"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा

क्यूँ करता तू इतनी भगदड़ सब धरा रह जायेगा

एक पहर जो हरि भजेगा मोक्ष परम सुख पायेगा

इतना धन तू कमा रहा है साथ ना कुछ भी जायेगा

दो पल अपनों को भी दे दे खुशियां बहु तजुटायेगा

मीठी बोली मुख में धर ले सम्मान बहु तकमायेगा

द्वेष भावना दूर जो कर ले जीवन सफल बनायेगा

जैसा जो कुछ कर्म करेगा वैसा ही फल पायेगा

बाकी इस धरा का इस धरा पर धरा रह जायेगा।

रचनाकार:

श्री स्वप्निल जैन

छिन्दवाड़ा(मप्र)
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(21) "....जीवन एक संघर्ष"

"जुनून"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

छोटे से गॉव में खेती बाड़ी से जुड़ा हंसता खेलता संपन्न परिवार था। जीवन में आवश्यक सभी संसाधनों की रेलम पेल थी। दस वर्षीय वेदांत दिन भर भागा दौड़ी उछलकूद करने में व्यस्त रहता उसका बड़ा भाई व्यंकटेश उन दिनों अपने पढ़ाई में लगा रहता। पिछले कुछ दिनों से वेदांत अपनी माँ से कहता पैरों में बहुत दर्द है, माँ सोचती दिनभर खेलकूद में बेटा थक जाता है।

वह कभी बाम लगा देती तो कभी कहानी सुनाकर उसे सुला देती। एक दिन जब मध्य रात्रि वह बच्चा उठ पैर दर्द के कारण घर में ही इधर से उधर चहलकदमी कर रहा था तब उसके दादा जी को चिंता हुई। उन्होंने दूसरे ही दिन उसे गांव के करीब शहर में अच्छे डॉक्टर को बताया किंतु वहाँ भी उनके समस्या की पुष्टि नहीं हुई तो महानगर का रुख लिया सभी चेकअप के पश्चात डॉक्टर को पैरों में पानी जमा होने की शंका हुई और उन्होंने बड़ा ऑपरेशन कर दिया दस साल के मासुत वेदांत के पैरों में छः माह प्लास्टर बंधा रहा जबकि उसे कैन्सर था पर रिपोर्ट नॉर्मल आयी ,उसके पश्चात नियति ने और ही क्रुर रूप धारण किया उसके पैरों की हड्डियां पूरी तरह दानवरूपी कैन्सरने जकड़ ली थी मुंबई, पुणे, नागपुर के दरमीयान रात दिन उपचार होते रहे किमोथेरेपी चलती रही पर वह मासुम छोटी सी उम्र में इन सब संघर्षो से जूझते हुए अपनी पढ़ाई जारी रख उसमें अव्वल आते रहा ग्यारह किमो और चार ऑपरेशन के बाद आखिर उसका एक पैर घुटनों के नीचे से काटना पड़ा और उसे आर्टिफिशियल पैर का सहारा दिया गया अपने इस नवीनतम रूप को भी उसने सहर्ष स्वीकार कर लगन से सरस्वती आराधना जारी रखीं स्कूल के इलेक्शन हो या अन्य गतिविधियां सबमें वह आगे रहता मात्र ग्यारह साल की आयु में उसे कैन्सर ने अपनी गिरफ्त में ले लिया , दिल्ली के एम्स में पढाई कर डॉक्टर बनने का उसका सपना था और उसने उसी दिशा में लगन से अध्ययन जारी रखा , हमेशा अपनी किताबों का बैग वह साथ ही रखता था, प्रतिकुल अवस्था में भी वह अपना अध्ययन पूर्ण करता माता पिता से बच्चे की असहनीय वेदना देखना दुभर हो गया।

जिंदगी की गाड़ी कुछ पटरी पर आ रही थी तभी यह कैन्सर रूपी दानव ने उसके लिवर में प्रवेश किया अब उम्मीद के तार टूटते हुए नजर आ रहे थे फिर वही ऑपरेशन और किमोथेरेपी का सिलसिला शुरू हुआ इस बीच वह आठवीं स्कॉलरशिप में संपूर्ण जिले में अव्वल आया। राह बहुत कॉटो से भरी थी पर उस बच्चे ने जो लक्ष्य साधा था बस उसी की साधना में दिन रात जुटा रहता। जीवन सफर दिन प्रतिदिन कठिन होते गया। उस गॉव में उच्च शिक्षा संबंधित अधिक सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं थी स्वयं के बलपर और नेट के माध्यम से उसने दसवीं में अपना मेरिट स्थान कायम रखा। हालात बिगड़ते ही जा रहे थे माता पिता जानने लगे अब यहं चंद महिनों का ही मेहमान है भीतर से उन्हें हरपल अनहोनी का डर लगा रहता पर। छः ऑपरेशन और बीस किमोथेरेपी ने भी उसका मनोबल दृढ़ रखा , सहनशीलता के साथ वेदांत ने नैशनल टेलेंट सर्च में भी मेरिट में आकर बाजी मारी इस अत्याधिक
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कठिन परिक्षा के दूसरे लेवल में भी उसकी नियुक्ति हो गई जबकि उस समय बच्चे का खाना पीना काफी छूट चुका था यह परिक्षा महानगर में जाकर देनी थी बारह लाख बच्चों में और इतनी प्रतिकुल अवस्था में पढ़ाई कर मेरिट आना बहुत चुनौतीपूर्ण था इतने संघर्षो में भी उसके मुख की मुस्कान बरकरार थी । परिक्षा के पश्चात एक माह में ही उसके प्राण पखेरु उड़ गये उस वक्त उसकी उम्र महज सोलह वर्ष की थी और छः साल से लगातार कैन्सर से जूझ रहा था ।काल के आगोश में जाने तक उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी । नैशनल टेलेंट सर्च के दूसरे लेवल का परिणाम घोषित हुआ तब तक वह दुनिया से विदा हो चुका था मुंबई, दिल्ली से बधाईयों के फोन आने लगे वह मॉ रोती बिलखती परेशान थी वह अपने बेटे वेदांत तक कैसे पहुचाती यह बधाई संदेश ।

" सफलता के सुमन कॉटो भरी राह में भी खिलते हैं जरूरी नहीं है उन्हें खिलने के लिए सुविधाओं का चमन ही हो ।" जीवन के संघर्षो को मात देते हुए जो अपने लक्ष्य पर अडिग रहता है वहीं सच्चा बाजीगर ।

रचनाकार:

श्रीमती राजश्री राठी

अकोला

(22) "....गठबंधन"

रचनाकार:

श्री अटल राम चतुर्वेदी

(23) "....सेवा शुल्क"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

सेवा शुल्क (रिश्वत)

सेवा शुल्क की महिमा अपार
घर बैठे हो नैया पार
सेवा शुल्क की ताकत जानो भाई
घंटों का काम मिनटों में हो जाई
सेवा शुल्क का होते ही प्रबंध
बन जाते तुरंत ही संबंध
नियम कायदे हो जाते तब गौण
हर कानून हो जाता मौन
बरसों पुराना काम तुरंत हो जाता
तभी सेवा शुल्क अपना असर दिखाता
सेवा शुल्क से होते सब सपने साकार
तब अंतरात्मा की ना सुने पुकार
माना रिश्वत देने वालों की संख्या है जारी
किंतु एक ईमानदारी सब पर है भारी
कोई खुशी से सेवा शुल्क न देता
दूसरे की मजबूरी का फायदा लेता
छोड़ो अपनी जिद्द
बन जाओ एक दिन गिद्ध
कर रही हूं तुमको आगाह
मिलेगी ना किसी की भी पनाह
परिणाम के लिए रहना तैयार
खड़े है ईमानदारी के पहरेदार
उस दिन छूटेगा रिश्वत का व्यापार
अपनी ही नजरों में गिरोगें बार–बार
हो जाओगे बेबस और लाचार
अपनी आत्मा को चंद सिक्कों में बेचकर
अपनी संपत्ति को दूसरों के नाम पर कर
जिस दिन तुम्हारा जमीर जागेगा
तब तक सब–कुछ मिट जाएगा
हाथ मलते रह जाओगे परिणाम ना झेल पाओगे
भिखारी की तरह हाथ फैलाओगे
अपने अरमानों का अर्थी सजाओगे
एक बात याद रखना हमेशा बिक जाता है रेशा –रेशा
ऊपर वाले की लाठी में आवाज नहीं होती
जब पड़ती है तब भी लाज नहीं आती है
अब तो सुधरों मानव, मत बनो तुम दानव
बने हो तुम क्यों अंधे, नहीं मिलेंगे चार भी कंधे।
नहीं मिलेंगें तुझको चंदे, अब तो जाग जाओ तू बंदे
अब तो जागो नयन के अंधे।

–डॉ. रेखा जैन (शिकोहाबाद)

अखिल सेतु

रचनाकार:

श्रीमती डॉ रेखा जैन
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(24) "....पराकाष्ठा"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

जीवन में कभी पराकाष्ठा सुखद अनुभूति कराती है, कभी दुखद । सुख और दुःख अनुकूलता और प्रतिकूलता पर निर्भर है। ध्रुव की साधना में विघ्न और भय की पराकाष्ठा थी।ईश्वर से साक्षात्कार होने के कारण सुखान्त श्रेणी के अन्तर्गत आती है।राजा हरिश्चंद्र के लिए सत्य और त्याग की पराकाष्ठा, सत्य सब कुछ त्याग सकता पर पराजित नहीं हो सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम राम की प्रतिष्ठा के लिए जनक दुलारी सीता जी के द्वारा सहनशीलता की पराकाष्ठा,राम को जन मानस में प्रतिष्ठित किया सीताजी के समर्पण की पराकाष्ठा ने जीवन में सफलता का आनन्द परिश्रम की पराकाष्ठा से सम्भव है,

माता पार्वती की तपस्या पराकाष्ठा का दिव्य उदाहरण है, उनका अपर्णा नाम पराकाष्ठा का प्रतीक है, जलकर भस्मीभूत होना ही पराकाष्ठा का शाब्दिक अर्थ है जिसे हर महापुरुष ने सिद्ध किया है, सत्य ,अहिंसा, प्रेम में शक्ति की पराकाष्ठा है जिससे महात्मा गांधी ने क्रान्ति की अलख जगाई, युगों पूर्व गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी जी महाव्रत की पालना से लोक मंगल की पराकाष्ठा को स्थापित करके मानवता का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विपरीत अधर्म की पराकाष्ठा, अनीति की पराकाष्ठा, आतंक की पराकाष्ठा, जीवन से विवशता पूर्ण पलायन की पराकाष्ठा का दुखद कारण बन जाता है।स्वीकार की पराकाष्ठा के उपरांत भी उपेक्षा की पराकाष्ठा स्वाभिमान पर गहरा आघात करती है। जमीन से जुड़ाव की पराकाष्ठा अधर्मी के लोभ, अमानवीय,बर्बरता पूर्ण दुराचरण के कारण अन्याय की पराकाष्ठा से जीवन को आजीवन दर्द से भर देता है। फिर भी मन में भाग्यवादी की पराकाष्ठा सन्तोषी भाव। यही हमारी संस्कृति है, यही भारतवासियों की प्रवृत्ति है, परिवार, घर आँगन, जीवन की सम्पूर्ण पूंजी खोकर शरणार्थियों का अभाव ग्रस्त जीवन यापन करने के लिए विवश होना, मानसिक पीड़ा की पराकाष्ठा है। व्यक्ति के विचार और मंथन की पराकाष्ठा व्यक्ति के विचार एवं मंथन के सामर्थ्य के सापेक्ष है। पात्रता और योग्यता पराकाष्ठा की नवीन सीमाओं को निर्धारित करती है। राम सेतु निर्माण के दौरान गिलहरी के श्रम या योगदान का विशेष महत्त्व रहा है, वह उसके श्रमसाधना की पराकाष्ठा रही थी। संघर्ष की पराकाष्ठा को हम श्रद्धा से नमन करते हैं,हर बहादुर योद्धा राष्ट्र के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करते समय संघर्ष की पराकाष्ठा दिखलाता है।अपना सब कुछ न्यौछावर करके वतनवासियों की रक्षा के लिए शत्रु से संघर्ष करते हु एअपनी जान की बाजी लगा देता है।

रचनाकार:

श्री किशनलाल जांगिड़

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(25)"....वो सुबह कब आएगी"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

वो सुबह कब आएगी

जब जो चाहो मिल जाएगी

जब मुझसे नयन मिलाएगी

वो सुबह....

जब बिना जाए तनख्वाह मिल जाएगी

जब नौकरी युवाओं को मिल जाएगी

वो सुबह....

जब बहू सास को अपने मुह लगाएगी

जब बेटी भाभी से सभी राज बतलाएगी

वो सुबह....

जब संसद पूरे सत्र शांति से चल पाएगी

जब रेल स्टेशन पर समय पर ही आएगी

वो सुबह....

जब बेटी आधी रात सुरक्षित घर आएगी

जब बेटी किसी की छींटाकशी से बच पाएगी

वो सुबह....

जब लेखकों को सम्मान स्वरूप पेंशन दी जाएगी

जब भूख लगने पर मशीन रोटी खिलाएगी

वो सुबह....

रचनाकार:

श्री राम प्रकाश अवस्थी "रूह"
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

(26) "....होली की कहानी"

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

रिटायर होने के बाद कंचन और उसके पति की दिनचर्या में काफी बदलाव आ गया था--! वो दोनों तड़के ही उठकर पार्क में चार पांच चक्कर लगाते! योग की नियमित कक्षाएं लेते ! प्रात: 5:30 से 8:00 तक का समय उनका इसी प्रकार व्यतीत होता था!

दो दिन बाद होली थी! घर में बहू के साथ कंचन को गुजिया बनाने की तैयारी भी करनी थी--! इसलिए कंचन पार्क में ज्यादा समय न लगाकर घर की ओर चल पड़ी! और उसके पति अपनी योग कक्षा में व्यस्त रहे! रास्ते में 65 -70 साल का एक व्यक्ति एकाएक कंचन के सामने आकर बोला - अरे कंचन तुम यहां रहती हो? मुझे पहचाना नहीं । कंचन भौंचक्की होकर अपलक उस अजनबी को देखती रही ! फिर चेहरे पर जानी पहचानी मुस्कान उभर आई !

बोली- वीरेंद्र तुम--! अरे तुम तो बिल्कुल बदल गए हो

वीरेंद्र मुस्कुराते हुए बोला- चालीस साल का समय कम थोड़े ही होता है --! बातों बातों में पता चला उसकी पत्नी गुजर गई है वो अपने छोटे बेटे के पास रहने आया था! काफी इधर उधर की बातें हुई उसे अपने घर आने का बोलकर कंचन घर आ गई !उसका दिल खुशी से धड़क उठा ! वो उसका सबसे अच्छा मित्र तो शुरू से ही था! लेकिन कॉलेज के समय से उनकी मित्रता पर खूब रंग चढ़ा! वो कंचन की खूब मदद करने के साथ-2 परवाह भी करता था!

नौकरी लग जाती तो शायंद मित्रता का रूप बदल जाता! तब तक कंचन की शादी हो गई !लेकिन हर साल होली के दिन या होली के एक दिन बाद वह अपने मित्र के साथ अक्सर उसके घर आता! गुलाल का टीका लगाता और हाथ मिलाता था !और वह उसकी भाभी को भी गुलाल लगाता और उनके पैर छूता! कंचन को यह सब बहुत अच्छा लगता था !अतीत की सारी यादें आंखों के आगे सजीव हो गई ! होली वाले दिन बेटे ने कहा - मम्मी आप से मिलने कोई अंकल आए हैं !

कंचन वीरेंद्र को देखकर बहुत खुश हो गई !उसने अपने पति और बच्चों से वीरेंद्र का परिचय कराते हुए कहा-" यह मेरी क्लासमेट हैं अब यही सोसाइटी में रहते हैं!" बेटे ने मुस्कुराते हुए कहा- अच्छा आपके फ्रेंड हैं कहकर उसने वीरेंद्र के पैर छू लिए !

सभी हंस पड़े !बहू गुजिया और नाश्ता लगा कर ले आई! सब ने एक-दूसरे को गुलाल लगाया वीरेंद्र ने हमेशा की तरह कंचन को गुलाल लगाकर हाथ मिलाया! और वो हंस पड़ी! उसकी मित्रता सुंदर रंगोली थी जिसे वो होली के कारण समझ पाई!

रचनाकार:

श्रीमती सरिता साहिल
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

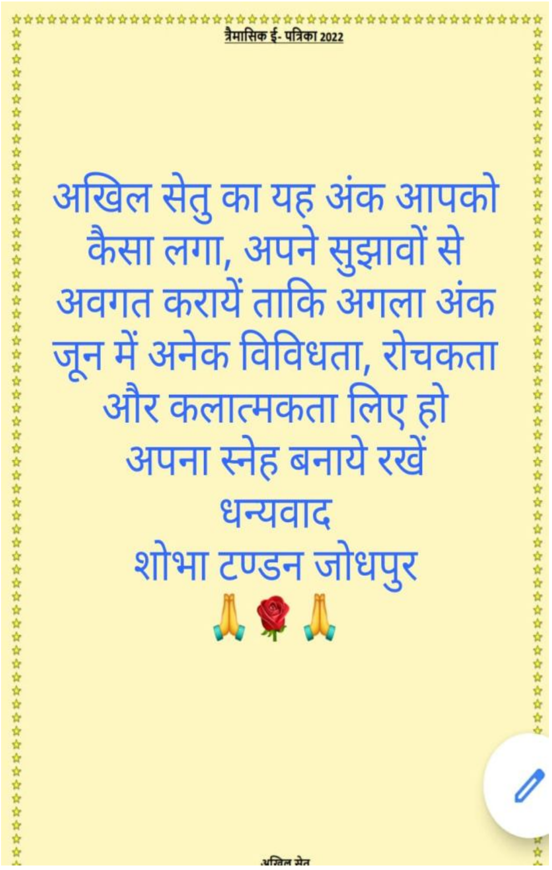

त्रैमासिक ई- पत्रिका 2022

अखिल सेतु का यह अंक आपको
कैसा लगा, अपने सुझावों से
अवगत करायें ताकि अगला अंक
जून में अनेक विविधता, रोचकता
और कलात्मकता लिए हो
अपना स्नेह बनाये रखें
धन्यवाद
शोभा टण्डन जोधपुर
🙏🌹🙏